

Shri Mahesh Rajsoni

Shri Mahesh Rajsoni is a well known Thewa Artist from Rajasthan.

2. Born on May 21, 1954, Shri Rajsoni graduated from Rajasthan University in 1976. Instead of joining govt. service he chose to continue with his family's ancestral art form. The Rajsoni family has been practising this art form for the last 400 years. He has been practising Thewa art for the past 42 years.

3. In order to preserve and bring recognition to Thewa art, Shri Rajsoni secured Geographical Indication Registry from the Govt. of India. He has been working as Member, Vice- President and treasurer of Rajasthan Thewa Art Society. He brought fame to the art by not only working on the age-old designs, but also by creating new designs.

4. Shri Rajsoni has participated in many state level and other handicraft exhibitions held in Bikaner, Jaisalmer, Jaipur, Udaipur, Kota and Jodhpur organized by Govt. of India. He has also participated in the International Trade Fare held at Pragati Maidan New Delhi in 1982. He has also visited Sri lanka and South Africa in order to propagate this art form.

5. Shri Rajsoni has received various awards and honours including National Award in 2008; State award in 1984 and International award by Sri Lankan government in 2011. His name also appeared in Limca Book of Record - National Record 2011 & India Book of Record 2014.



श्री महेश राजसोनी

श्री महेश राजसोनी, राजस्थान के बहुत जाने-माने थेवा कलाकार हैं।

2. आपका जन्म मई 21, 1954 को हुआ। आपने सन् 1976 में राजस्थान विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि हासिल की। आपने सरकारी नौकरी में आने के स्थान पर अपने परिवार के पैतृक कला-रूप (आर्ट फॉर्म) पर ही काम करने को जारी रखना चुना। आपका परिवार पिछले 400 सालों से इस कला-रूप (आर्ट फॉर्म) से संबंधित काम करता आ रहा है। आप पिछले 42 साल से थेवा आर्ट से संबंधित काम करते आ रहे हैं।

3. थेवा कला का संरक्षण करने और इसे मान्य ठहराने के सिलसिले में आपने भारत-सरकार से भौगोलिक निर्देशन (जियोग्रेफिकल इंडिकेशन) रजिस्ट्री हासिल की। आप राजस्थान थेवा कला सोसाइटी के सदस्य, उपाध्यक्ष और खजांची के रूप में काम करते आ रहे हैं। आपने न केवल वर्षों पुरानी डिजाइनों पर काम करके, बल्कि नई डिजाइनों की रचना करके भी इस कला को प्रसिद्धि दिलवाई।

4. आपने भारत-सरकार द्वारा बीकानेर, जैसलमेर, जयपुर, उदयपुर, कोटा और जोधपुर में आयोजित अनेक राज्य स्तरीय और अन्य हस्तशिल्प-प्रदर्शनियों में हिस्सा लिया है। आपने सन् 1982 में प्रगति मैदान, नई दिल्ली में आयोजित अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले में भी हिस्सा लिया है। इस कला-रूप (आर्ट फॉर्म) का प्रचार-प्रसार करने के लिए आपने श्रीलंका और दक्षिण अफ्रीका की भी यात्रा की।

5. आपको विभिन्न पुरस्कारों और सम्मानों से विभूषित किया गया है, जिनमें सन् 2008 में प्रदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार; सन् 1984 में प्रदत्त राज्य पुरस्कार और सन् 2011 में श्रीलंका की सरकार द्वारा प्रदान किया गया अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार शामिल हैं। आपका नाम लिम्का बुक ऑव रेकॉर्ड –नेशनल रेकॉर्ड 2011 और इण्डिया बुक ऑव रेकॉर्ड 2014 में भी आया।